केड्डी वड्डाई, गुणियां पुरिख दयाल जी,
जंहिं रखी हथु मथे से, ममत मिटाई,
मूरत महबूबनि जी, अनभव में आई,
सामी सभोई, विसु वसे जंहिं आसिरे.

सामी जी अपने सद्गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं- मैं दयालु सत्पुरुष/सद्गुरु की महिमा किन शब्दों में गिनाऊँ ? मेरे सद्गुरु ने मुझ पर कृपा की और अपना हाथ आशीष स्वरूप मेरे माथे पर रख दिया। सद्गुरु ने अपनी कृपा से मेरे अंदर की ममता (आसक्ति, मोह आदि) मिटा दी। उससे मेरा मन विकार-रहित बन गया। फलस्वरूप मुझे प्रियतम परमेश्वर की अनुभूति हुई। तब मुझे ऐसे परब्रह्म-परमेश्वर की अनुभूति हुई, जिसके आधार पर यह विश्व बसा हुआ है।

हमारी संस्कृति की गढ़न-गठन में संतों का योगदान बहुमूल्य माना गया है। जगत् में जीव का हित साधने वाले दो हैं- एक श्रुति ग्रंथ और दूसरे संत जन। श्रुति-ग्रंथ दुर्बोध हैं। पर संतों की सीख सुबोध है। आत्मज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में संतों क बड़ा महत्व है और इन में सद्गुरु का भी समावेश होता है, जो आत्म साक्षात्कार कराने में सहायक होते हैं। सद्गुरु ही मनुष्य को, शिष्य अथवा साधक को तुम परमात्मा का रूप हो इस सत्य का बोध कराने वाले होते है। अपने निज स्वरूप को पहचानने का प्रयत्न करो। परमात्मा तुम्हारे अंदर ही है। उसको पहचानो। ''अपने मन को निर्मल, शुद्ध बनाओ। विकार रहित मन से प्रभु की भक्ति करो।'' इस प्रकार सद्गुरु की शरण में जाने से शिष्य के मन का अंधकार/अज्ञान दूर हो सकता है। सद्गुरु परब्रह्म, परमात्मा का अनुभव कराने में सहायक सिद्ध होते हैं। सद् शिष्य को सद्गुरु परमात्मा का साक्षात्कार करा सकते हैं। सद्गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए संत कबीर कहते हैं,

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष समान।
तीनों लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्ही दान ।।

गुरु देने वाले होते हैं और शिष्य लेने वाला। गुरु अपने शिष्य को तीनों लोकों की सम्पत्ति प्रदान करने वाले होते हैं। महाकवि सामी इससे भी आगे बढ़कर कहते हैं कि सद्गुरु ही परब्रह्म, परमेश्वर के दर्शन कराने वाले होते हैं। इस दृष्टि से गुरु/सद्गुरु की महिमा अनंत है।

■